



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 10 (अक्टूबर, 2026)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

ग्रीन गोल्ड: उच्च मूल्य वाली सब्जियों का बढ़ता बाज़ार

*आँचल¹, डॉ. दीपा शर्मा² एवं गार्गी कपूर³

¹स्नातकोत्तर शोधार्थी, सब्जी विज्ञान विभाग, औद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, नेरी, डॉ. वाई.एस. परमार

औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत

²वरिष्ठ वैज्ञानिक, सब्जी विज्ञान विभाग औद्यानिकी, एवं वानिकी महाविद्यालय, नेरी, डॉ. वाई.एस. परमार

औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: anchal1775@gmail.com

भारतीय कृषि केवल खाद्यान्न उत्पादन तक सीमित नहीं है। बदलती जीवनशैली, बढ़ती आय, शहरीकरण, स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता और उपभोक्ताओं की बदलती पसंद ने फसलों की मांग तथा कृषि बाजार का स्वरूप बदल दिया है। इस बदलते परिदृश्य में उच्च-मूल्य वाली सब्जियाँ किसानों के लिए आय का एक आकर्षक विकल्प बनकर उभरी हैं। उच्च-मूल्य वाली सब्जियों से आशय ऐसी सब्जियों से है, जिनका उत्पादन अपेक्षाकृत कम मात्रा में होता है, लेकिन बाजार में पारंपरिक सब्जियों की तुलना में इनके बेहतर दाम मिलते हैं। विभिन्न रंगों वाली शिमला मिर्च, चेरी टमाटर, लेट्यूस, ब्रोकली, ज़ुकीनी, एस्परेगस, बेबी कॉर्न तथा अन्य बेमौसमी सब्जियाँ बड़े शहरों, होटलों, सुपरमार्केट और अन्य आधुनिक बाजारों तक पहुँच रही हैं। इनके बाजार मूल्य के अलावा, उच्च-मूल्य वाली सब्जियाँ फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने, लघु जोत से अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त करने तथा पारंपरिक फसलों के स्थान पर लाभकारी विकल्प उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण हैं। इन विशेषताओं के कारण उच्च-मूल्य वाली सब्जियों को उचित रूप से 'ग्रीन गोल्ड' कहा जा सकता है। जिस प्रकार कम मात्रा में भी सोने का आर्थिक मूल्य अधिक होता है, उसी प्रकार उपयुक्त बाजार, अनुकूल जलवायु और सही उत्पादन तकनीकों के साथ उच्च-मूल्य वाली सब्जियाँ छोटी भूमि पर भी बेहतर आर्थिक लाभ दे सकती हैं।

बदलते बाजार में सब्जियों की बदलती भूमिका

भारत विश्व के प्रमुख फल एवं सब्जी उत्पादक देशों में शामिल है। वर्ष 2024-25 के अनुसार, भारत में कुल बागवानी उत्पादन लगभग 370.74 मिलियन टन रहा, जबकि कुल सब्जी उत्पादन लगभग 217.80 मिलियन टन था। यह भारतीय कृषि में सब्जी क्षेत्र के बढ़ते आर्थिक, पोषण संबंधी और रोजगारपरक महत्व को दर्शाता है। उपभोक्ताओं की पसंद बदल रही है और अब वे ऐसी सब्जियों की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं, जिनमें अच्छा स्वाद, आकर्षक रंग-रूप, उच्च पोषण मूल्य और स्वास्थ्य संबंधी लाभ हों। आलू, प्याज, टमाटर, फूलगोभी, पत्तागोभी, बैंगन और सामान्य हरी सब्जियों का व्यापक रूप से सेवन किया जाता है, लेकिन ब्रोकली, लेट्यूस, विभिन्न रंगों वाली शिमला मिर्च और चेरी टमाटर जैसी सब्जियाँ भी उपभोक्ताओं के बीच लोकप्रिय हो रही हैं। रेस्टोरेंट और कैफे से लेकर सुपरमार्केट तथा ऑनलाइन किराना बाजारों तक, उच्च-मूल्य वाली सब्जियों का बाजार तेजी से विस्तार कर रहा है। बढ़ती स्वास्थ्य जागरूकता के साथ सलाद, ताजी कटी सब्जियों, तुरंत पकाने योग्य उत्पादों और विभिन्न देशों के व्यंजनों की बढ़ती लोकप्रियता भी इन सब्जियों की मांग को बढ़ा रही है। यह बदलाव किसानों के लिए उत्पादन में विविधता लाने और अधिक आय प्राप्त करने के नए अवसर पैदा कर रहा है तथा उच्च-मूल्य वाली सब्जियों को आधुनिक सब्जी खेती का 'ग्रीन गोल्ड' बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

कौन-सी सब्जियाँ कहलाती हैं 'ग्रीन गोल्ड'?

उच्च-मूल्य वाली सब्जियों की कोई निश्चित सूची नहीं है। इनका मूल्य किस्म, उत्पादन मौसम, क्षेत्र, गुणवत्ता, बाजार की मांग, आपूर्ति और बाजार से दूरी के आधार पर बदल सकता है। फिर भी कुछ सब्जियाँ बेहतर आर्थिक लाभ और बाजार के अधिक अवसर प्रदान करती हैं।

सब्जी	मुख्य विशेषता	प्रमुख बाजार
विभिन्न रंगों वाली शिमला मिर्च	आकर्षक रंग, उच्च गुणवत्ता और बेहतर बाजार मूल्य	होटल, रेस्टोरेंट, सुपरमार्केट

सब्जी	मुख्य विशेषता	प्रमुख बाजार
चेरी टमाटर	छोटा आकार, समृद्ध स्वाद और आकर्षक रूप	सलाद, होटल, सुपरमार्केट
ब्रोकली	उच्च पोषण मूल्य और स्वास्थ्य लाभ	शहरी बाजार, होटल
लेट्यूस	सलाद और आधुनिक खाद्य व्यंजनों में अधिक पसंद	होटल, कैफे, सुपरमार्केट
जुकीनी	विशेष एवं विदेशी सब्जी के रूप में अधिक मांग	होटल, शहरी बाजार
बेबी कॉर्न	ताजा तथा प्रसंस्कृत दोनों रूपों में उपयोग	होटल, रेस्टोरेंट
बेमौसमी सब्जियाँ	बेमौसम उपलब्धता के कारण बेहतर मूल्य	स्थानीय और महानगरीय बाजार

संरक्षित खेती : 'ग्रीन गोल्ड' के लिए उत्पादन तकनीक

उच्च-मूल्य वाली सब्जियों के सफल उत्पादन में संरक्षित खेती का महत्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि इससे फसल की वृद्धि के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया जा सकता है। पॉलीहाउस, नेट हाउस और शेड-नेट जैसी संरचनाओं की सहायता से उत्पादक तापमान, आर्द्रता, प्रकाश, सिंचाई और फसल पोषण को नियंत्रित कर सकते हैं। विभिन्न रंगों वाली शिमला मिर्च, चेरी टमाटर, बीजरहित खीरा, लेट्यूस तथा अन्य विशिष्ट सब्जियाँ ऐसी नियंत्रित परिस्थितियों में विशेष रूप से अच्छी तरह विकसित होती हैं। संरक्षित खेती प्रतिकूल मौसम की परिस्थितियों से होने वाले जोखिम को कम करती है और बेमौसमी उत्पादन को अधिक व्यावहारिक बनाती है। संरक्षित खेती का एक प्रमुख लाभ यह है कि किसान बाजार की मांग के अनुसार फसल की कटाई का समय निर्धारित कर सकते हैं। मुख्य मौसम में सब्जियों की अधिक आपूर्ति होने पर अक्सर बाजार भाव कम हो जाते हैं। इसके विपरीत, बेमौसम उत्पादन से बेहतर मूल्य प्राप्त हो सकते हैं, जिससे यह किसानों के लिए लाभकारी विकल्प बनता है। विशेष रूप से पहाड़ी और ठंडे क्षेत्रों में किसान अनुकूल परिस्थितियों का लाभ उठाकर उस समय सब्जियों की आपूर्ति कर सकते हैं, जब उनकी मांग अधिक होती है।

चंबा की 'ग्रीन गोल्ड' परियोजना : सब्जियों के लिए नए बाजारों का निर्माण

उच्च-मूल्य एवं बेमौसमी सब्जी उत्पादन को ग्रामीण आजीविका से जोड़ने का एक उल्लेखनीय उदाहरण हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले में संचालित 'ग्रीन गोल्ड परियोजना' है। जिला ग्रामीण विकास अभिकरण (डीआरडीए), चंबा के आधिकारिक दस्तावेजों के अनुसार, इस परियोजना का उद्देश्य किसानों को पारंपरिक कम उपज वाली फसलों से अधिक लाभ देने वाली नकदी फसलों और विविधीकृत कृषि की ओर बढ़ने में सहायता करना था। चंबा की विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए बेमौसमी सब्जी उत्पादन को इस पहल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया गया। परियोजना के अंतर्गत औषधीय एवं सुगंधित पौधों, पुष्प उत्पादन, मशरूम उत्पादन तथा डेयरी प्रबंधन में सुधार को भी बढ़ावा दिया गया। हालांकि, सब्जी उत्पादन इसके सबसे व्यापक रूप से अपनाए गए घटकों में से एक बना। इस प्रकार, चंबा का सब्जी मॉडल 'ग्रीन गोल्ड' की अवधारणा के व्यावहारिक उपयोग को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस परियोजना के अंतर्गत किसानों को फूलगोभी, पत्तागोभी, टमाटर, मटर, आलू, फ्रेंच बीन और खीरे की उन्नत किस्में उगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके साथ ही व्यापक तकनीकी प्रशिक्षण, खेत प्रदर्शन तथा कृषि आदानों की सुविधा प्रदान की गई। कुल 290 प्रशिक्षण कार्यशालाएँ और खेत प्रदर्शन आयोजित किए गए तथा बीज एवं अन्य आवश्यक कृषि आदान रियायती दरों पर उपलब्ध कराए गए।

परियोजना की प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

परिवारों तक पहुँच : लगभग 5,500 परिवारों को 550 स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से बेमौसमी सब्जी उत्पादन घटक से जोड़ा गया।

क्षेत्र विस्तार : 2,414 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र को बेमौसमी सब्जी उत्पादन के अंतर्गत लाया गया। सलूणी क्षेत्र में सब्जी उत्पादन का क्षेत्र 158 हेक्टेयर से बढ़कर 649 हेक्टेयर हो गया, जो किसानों की बढ़ती रुचि को दर्शाता है।

अवसंरचना: उत्पादन को सहयोग देने के लिए समूह स्तर पर 15 पॉलीहाउस और 50 जल-संग्रहण संरचनाएँ निर्मित की गईं। परियोजना की सफलता का एक प्रमुख कारण इसकी विपणन रणनीति थी। स्वयं सहायता समूहों को सीधे विपणन समितियों से जोड़ने से किसानों की बिचौलियों पर निर्भरता कम हुई। प्रमुख सब्जी बाजारों के अध्ययन दौरों से किसानों को थोक व्यापारियों के साथ सीधे संपर्क का अवसर भी मिला।

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, चंबा के अनुसार, फूलगोभी, टमाटर, फ्रेंच बीन, खीरा, पत्तागोभी और मटर की उन्नत किस्मों की खेती करने वाले किसानों ने बेमौसमी सब्जी घटक के अंतर्गत लगभग 24.50 करोड़ रुपये का सकल प्रतिफल और लगभग 21.25 करोड़ रुपये की शुद्ध आय दर्ज की। परियोजना अभिलेखों से यह भी पता चलता है कि किसानों ने पारंपरिक खेती की तुलना में सब्जी उत्पादन से कई गुना अधिक प्रतिफल प्राप्त किया, जिससे यह परियोजना की सबसे लोकप्रिय पहलों में से एक बनी।

चंबा मॉडल से मिलने वाली सीख

‘ग्रीन गोल्ड परियोजना’ का सब्जी घटक तीन महत्वपूर्ण बातें सामने लाता है:

समय का महत्व : बेहतर आर्थिक लाभ सुनिश्चित करने के लिए सब्जी उत्पादन का समय बहुत महत्वपूर्ण है। बेमौसम फसलें उगाने से बाजार के बेहतर अवसर मिल सकते हैं और कृषि आय में सुधार हो सकता है।

सामूहिक शक्ति : स्वयं सहायता समूह और किसान उत्पादक संगठन जैसे सामूहिक संस्थान छोटे किसानों को कृषि आदानों, ज्ञान और बाजार तक बेहतर पहुँच दिलाकर उन्हें सशक्त बनाने की क्षमता रखते हैं।

बाजार से जुड़ाव : मजबूत बाजार संपर्क आवश्यक हैं। खरीदारों से सीधे संपर्क से किसानों को बेहतर मूल्य मिल सकता है और बिचौलियों पर निर्भरता कम हो सकती है।

परियोजना की सफलता के प्रमुख कारकों में उन्नत किस्में, तकनीकी प्रशिक्षण, बेमौसमी उत्पादन, जल एवं अवसंरचना की सुविधाएँ तथा सामूहिक विपणन शामिल थे।

हिमाचल प्रदेश में भविष्य की संभावनाएँ

विविध ऊँचाई और जलवायु परिस्थितियों के कारण हिमाचल प्रदेश को विभिन्न प्रकार की सब्जियों के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ प्राप्त है। मध्य से ऊँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्र बेमौसमी फसल उत्पादन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त हैं। सोलन, शिमला और चंबा जैसे जिलों में ब्रोकली, लेट्यूस, विभिन्न रंगों वाली शिमला मिर्च, चेरी टमाटर, मटर आदि के उत्पादन के विस्तार की अच्छी संभावनाएँ हैं। राज्य के लिए सबसे प्रभावी रणनीति स्थानीय कृषि-जलवायु विशेषताओं को सीधे शहरी बाजार की मांग से जोड़ना है। उत्पादन समूहों में मिलकर कार्य करने से किसान अच्छी गुणवत्ता वाली उपज की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित कर सकते हैं तथा होटल रेस्टोरेंट, खुदरा विक्रेताओं और अन्य खरीदारों के साथ सीधे संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

बाजार की मांग, निर्यात की संभावनाएँ और मूल्य संवर्धन

तेजी से हो रहा शहरीकरण उच्च-मूल्य वाली सब्जियों की मांग बढ़ा रहा है। बदलती खाद्य पसंद, सुपरमार्केट और ऑनलाइन किराना बाजारों की बढ़ती पहुँच किसानों के लिए विभिन्न प्रकार की सब्जियों के उत्पादन और विपणन के नए अवसर पैदा कर रही है। उच्च गुणवत्ता वाली भारतीय सब्जियों की मांग घरेलू बाजार तक सीमित नहीं है। कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) के अनुसार भारत ने वर्ष 2024-25 में लगभग 21.51 लाख टन ताजी सब्जियों का निर्यात किया। किसान बेहतर श्रेणीकरण, पैकेजिंग और सरल प्रसंस्करण के माध्यम से अपनी उपज का मूल्य और बढ़ा सकते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

चेरी टमाटर : छोटे खुदरा पैकेटों में पैकिंग।

बेबी कॉर्न : प्रसंस्करण एवं वैक्यूम पैकिंग द्वारा अधिक समय अवधि तक संरक्षण।

लेट्यूस एवं हरी पत्तेदार सब्जियाँ : धुली हुई, सीधे खाने योग्य सलाद मिश्रण के रूप में विपणन।

ब्रोकली : ताजी कटी कलियों या न्यूनतम प्रसंस्करण वाले पैकेटों के रूप में।

विभिन्न रंगों वाली शिमला मिर्च : श्रेणीकरण करके बहुरंगी मिश्रित पैकेटों में बिक्री।

प्रमुख चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ

उच्च प्रतिफल की संभावनाओं के बावजूद, सब्जी उत्पादकों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे:

- बाजार भाव में उतार-चढ़ाव
- प्रारंभिक निवेश की अधिक आवश्यकता
- तकनीकी कौशल की आवश्यकता
- जल्दी खराब होने वाली उपज और कटाई के बाद होने वाली हानियाँ
- परिवहन लागत
- गुणवत्तापूर्ण कृषि आदानों तक सीमित पहुँच

उच्च-मूल्य वाली सब्जी उत्पादन को टिकाऊ ‘ग्रीन गोल्ड’ बनाने के लिए किसानों को ऐसी समन्वित रणनीति अपनाने की आवश्यकता है, जो उत्पादन, गुणवत्ता नियंत्रण, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और सीधे विपणन को आपस में जोड़े। फसल का चयन केवल दूर के बाजारों में वर्तमान कीमतों को देखकर नहीं किया जाना चाहिए। बुवाई से पहले किसानों को स्थानीय जलवायु की अनुकूलता, पूंजी की आवश्यकता, परिवहन लागत, बाजार की निकटता और सुनिश्चित खरीदारों जैसे पहलुओं पर विचार करना चाहिए।

निष्कर्ष

आधुनिक कृषि में उच्च-मूल्य वाली सब्जियों की खेती शहरी विकास, स्वास्थ्य जागरूकता, सुपरमार्केट नेटवर्क, खाद्य सेवा क्षेत्र के विस्तार और निर्यात के अवसरों से प्रेरित एक महत्वपूर्ण कृषि-व्यवसाय के रूप में उभर रही है। चंबा की 'ग्रीन गोल्ड परियोजना' दर्शाती है कि बेमौसमी फसल उत्पादन, उन्नत किस्मों, तकनीकी प्रशिक्षण, किसान समूहों और सीधे बाजार संपर्क को एक साथ जोड़कर किसानों के लिए बेहतर आय के अवसर पैदा किए जा सकते हैं। 'ग्रीन गोल्ड' केवल उच्च-मूल्य या विदेशी फसलों की किस्में उगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है—सही मौसम और सही बाजार के लिए सही फसल का चयन। अंततः, दीर्घकालीन कृषि सफलता के लिए केवल उपज बढ़ाने के लक्ष्य से आगे बढ़कर एक संतुलित रणनीति अपनाना आवश्यक है—सही फसल, सही समय, सही गुणवत्ता और सही बाजार। जब ये सभी तत्व एक साथ आते हैं, तब उच्च-मूल्य वाली सब्जियाँ छोटे और सीमांत किसानों के लिए वास्तव में 'ग्रीन गोल्ड' बन सकती हैं।